धार्मिक बाल कविता संग्रह

नन्हे मुन्ने ज्ञायक हम

रचनाकार - विराग शास्त्री (जबलपुर) देवलाली

प्रकाशक - आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाउन्डेशन रजि., जबलपुर म.प्र.

नन्हे मुन्ने

धार्मिक बाल कवितायें

ज्ञायक हम

रचनाकार
विराग शास्त्री (जबलपुर), देवलाली

चित्रांकन
कु. निधि अनिल शाह, भावनगर गुज.

विशेष सहयोग
श्रीमति सूरजबेन अमुलखराय स्मृति ट्रस्ट, मुंबई

© सर्वाधिकार सुरक्षित प्रथम तीन आवृत्ति - ५००० अप्रेल -अगस्त २०१० मूल्य - 50 रू. (सी.डी. सहित)

1. आओ हम सब खेलें खेल
2. आसमान में चंदा मामा
3. हाथी दादा कहां चले
4. पानी बरसा छम छम छम
5. बच्चे बोले जय जिनेन्द्र
6. रोज सबेरे जल्दी उठना
7. एक फूल बच्चों से बोला
8. टिक टिक टिक हाथ घुमाती
9. चलो सैर को लोभी राम
10. पांच रंग का सुन्दर झंडा
11. आतम देह का कैसा साथ
12. मंदिर हम क्यों जाते हैं ?
13. जिनमंदिर है समवशरण सा
14. चिड़िया सुन ले कुट कुट कुट
15. मेरी प्यारी नानी
16. घंटा बोला टन टन टन

प्राप्ति स्थान

1- बंगला नं. 50, कहान नगर सोसायटी, लाम रोड, बेलतगांव रास्ता, पो. देवलाली
जि. नासिक 422401 महा. मो. 9373294684, 9423212084

2- श्री महावीर स्वामी दिगम्बर जिन मंदिर, द्वितीय मंजिल, पायलवाला मार्केट, बड़ा फुहारा, जबलपुर 482002 म.प्र.

प्रकाशक - आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाऊन्डेशन रजि., सर्वोदय, 702, जैन बन्धु, फूटाताल, जबलपुर 482002 म.प्र.

1

आओ हम सब खेलें खेल

आओ हम सब खेलें खेल,
चलती है अब मोक्ष की रेल।
प्रभु अरहंत हैं गार्ड हमारे,
रत्नत्रय डिब्बे का मेल।
चेतन राजा जल्दी बैठो,
वरना छूट जायेगी रेल।।

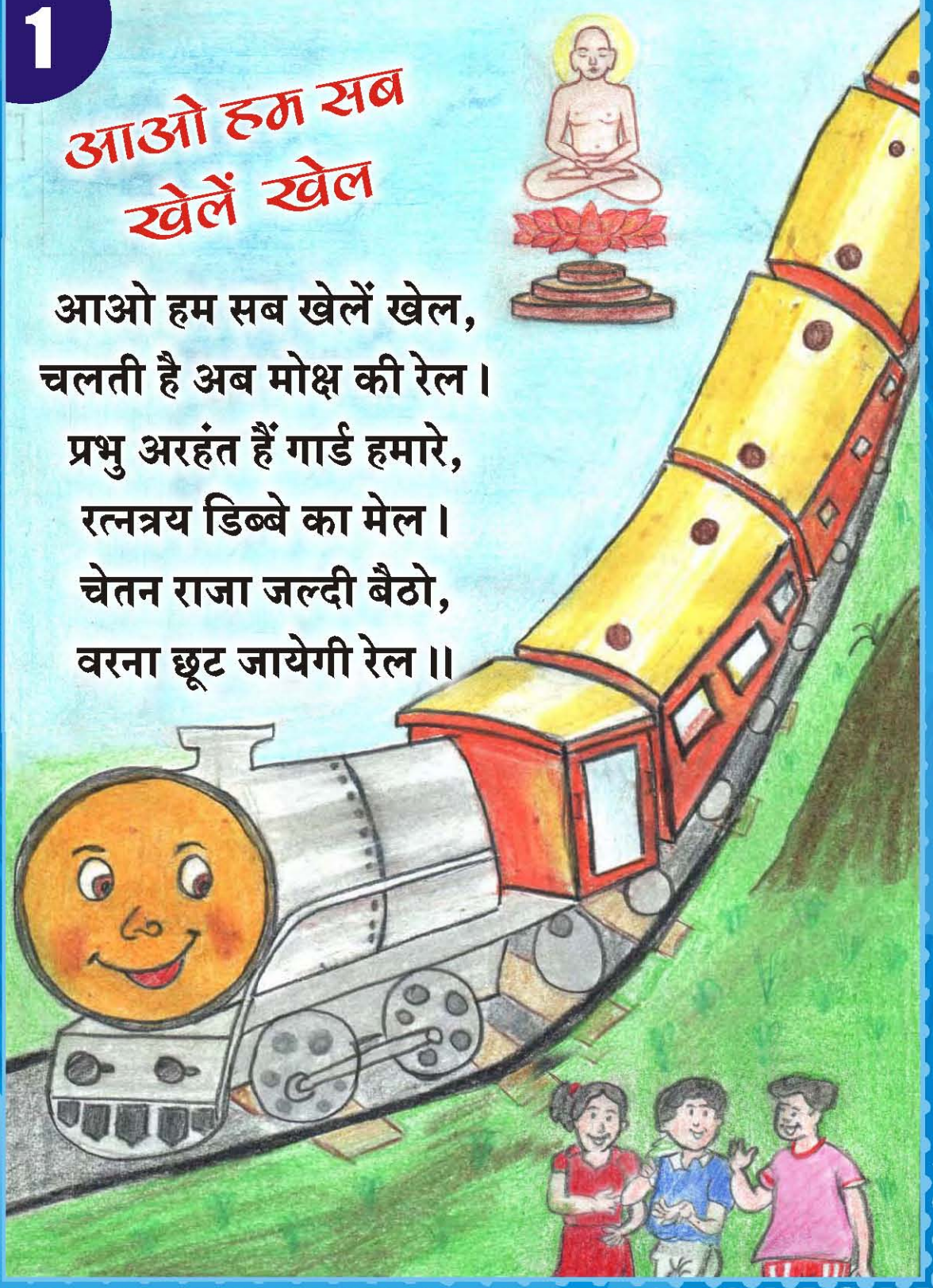

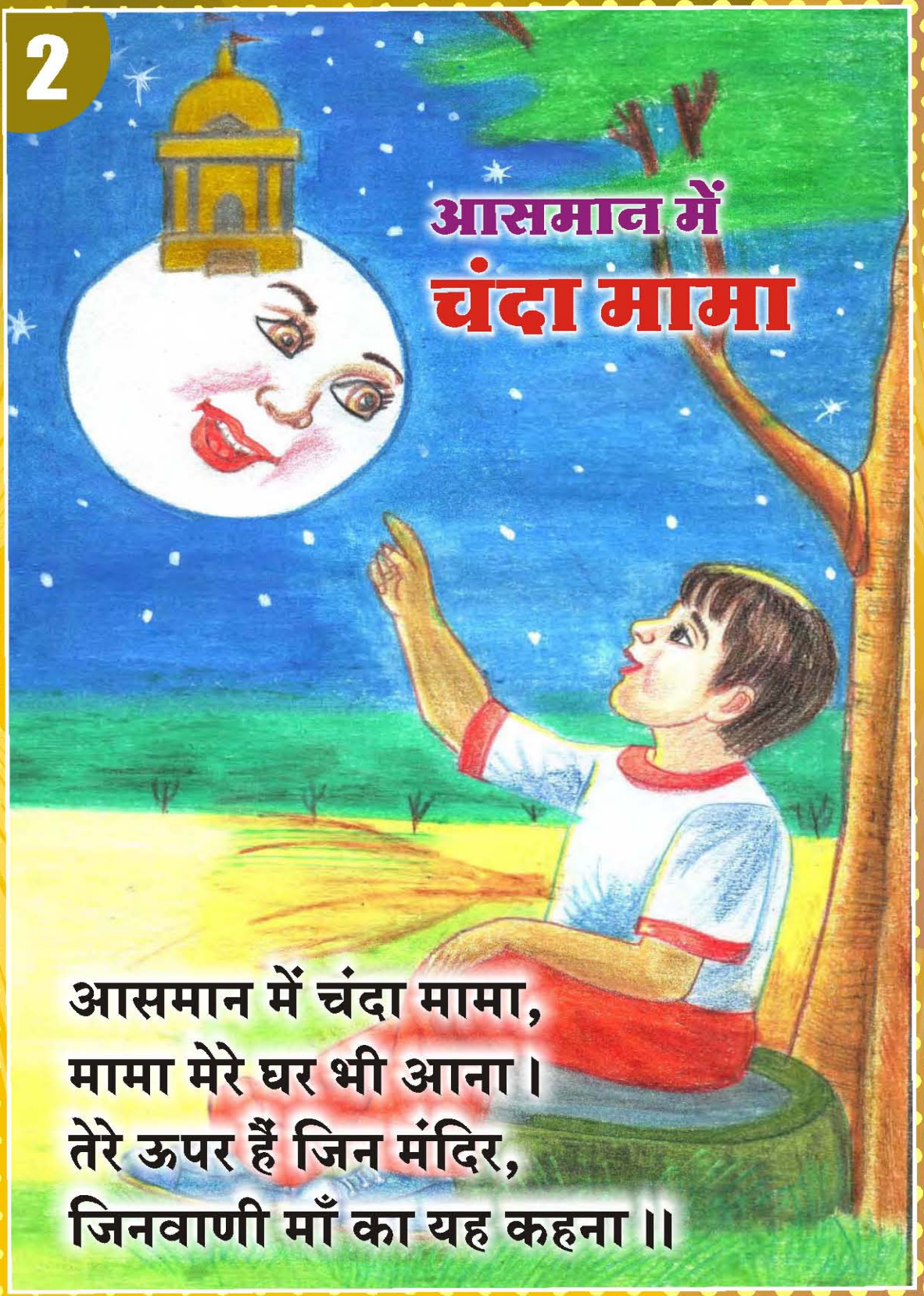

आसमान में
चंदा मामा

आसमान में चंदा मामा,
मामा मेरे घर भी आना।
तेरे ऊपर हैं जिन मंदिर,
जिनवाणी माँ का यह कहना ॥

3 हाथी दादा कहाँ चले

हाथी दादा कहाँ चले ?
सूंड़ उठाकर कहां चले ?
मेरे घर भी आओ ना ।
हलुआ-पूरी खाओ ना ।

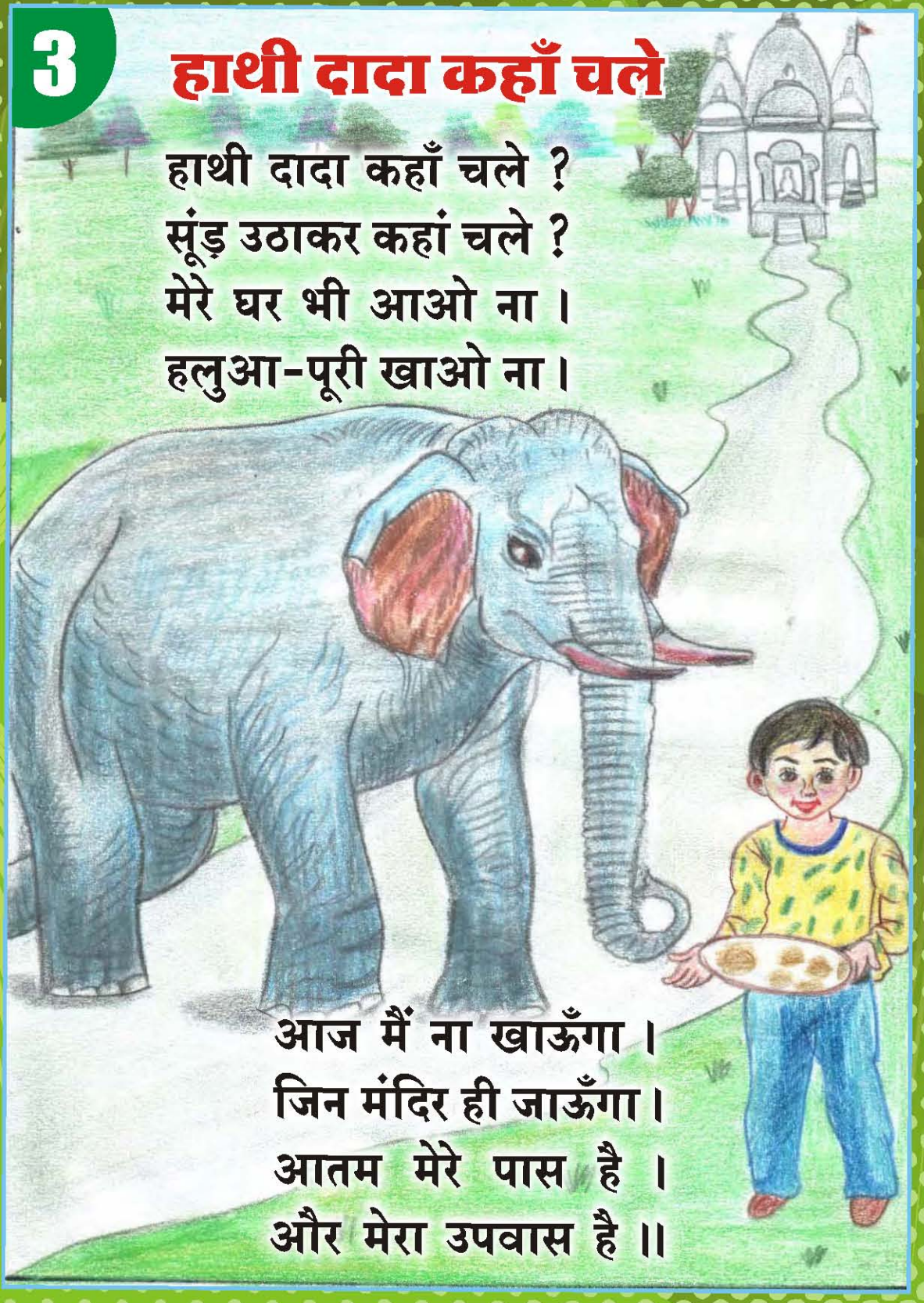

आज मैं ना खाऊँगा ।
जिन मंदिर ही जाऊँगा ।
आतम मेरे पास है ।
और मेरा उपवास है ।।

4

पानी बरसा छम छम छम

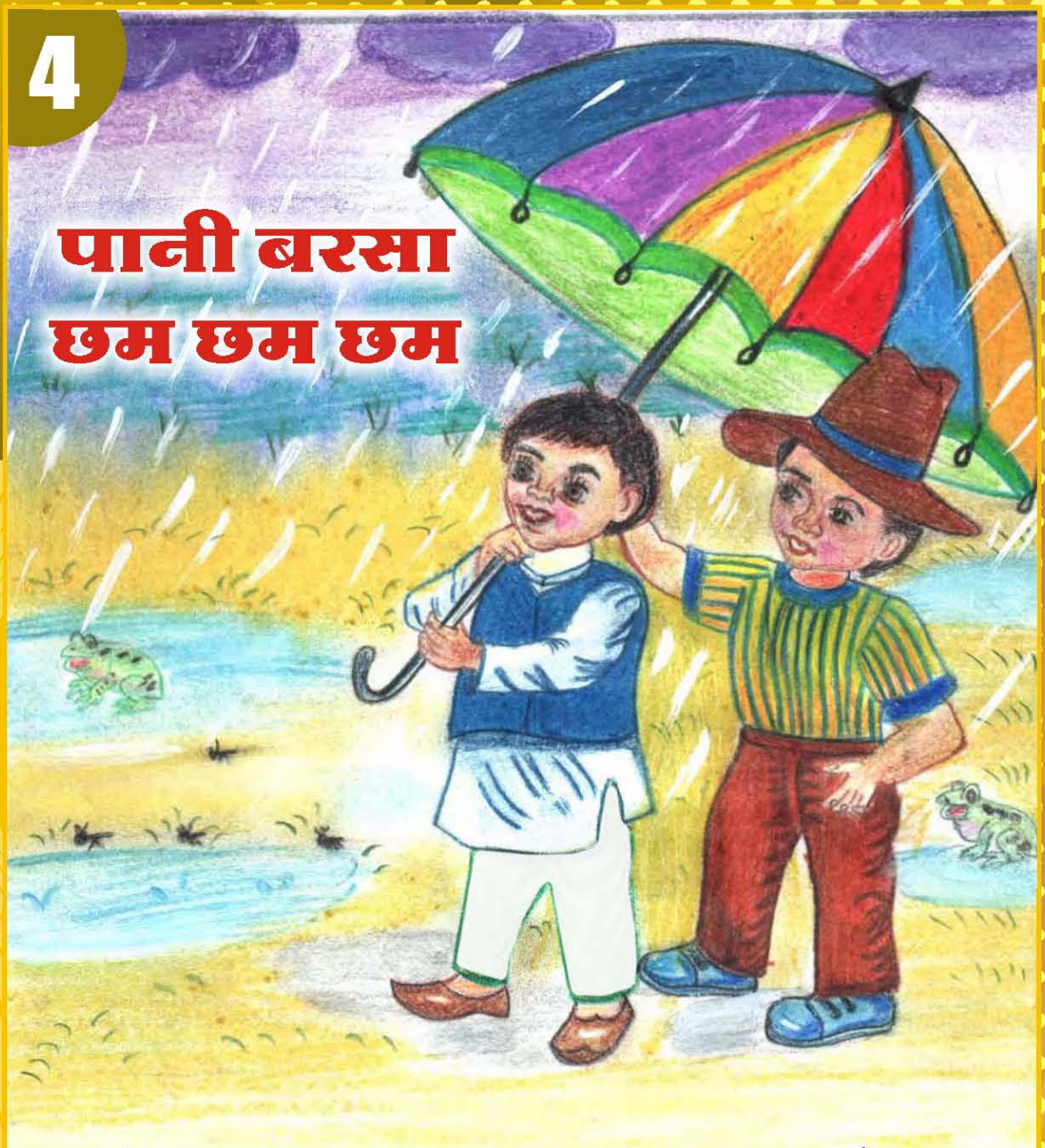

पानी बरसा छम छम छम, ऊपर छाता नीचे हम ।
पानी में न खेलें हम, जीव की रक्षा करते हम ।
अच्छे हम राजा हम, नन्हे मुन्ने ज्ञायक हम ।।

5

बच्चे बोले

जय जिनेन्द्र

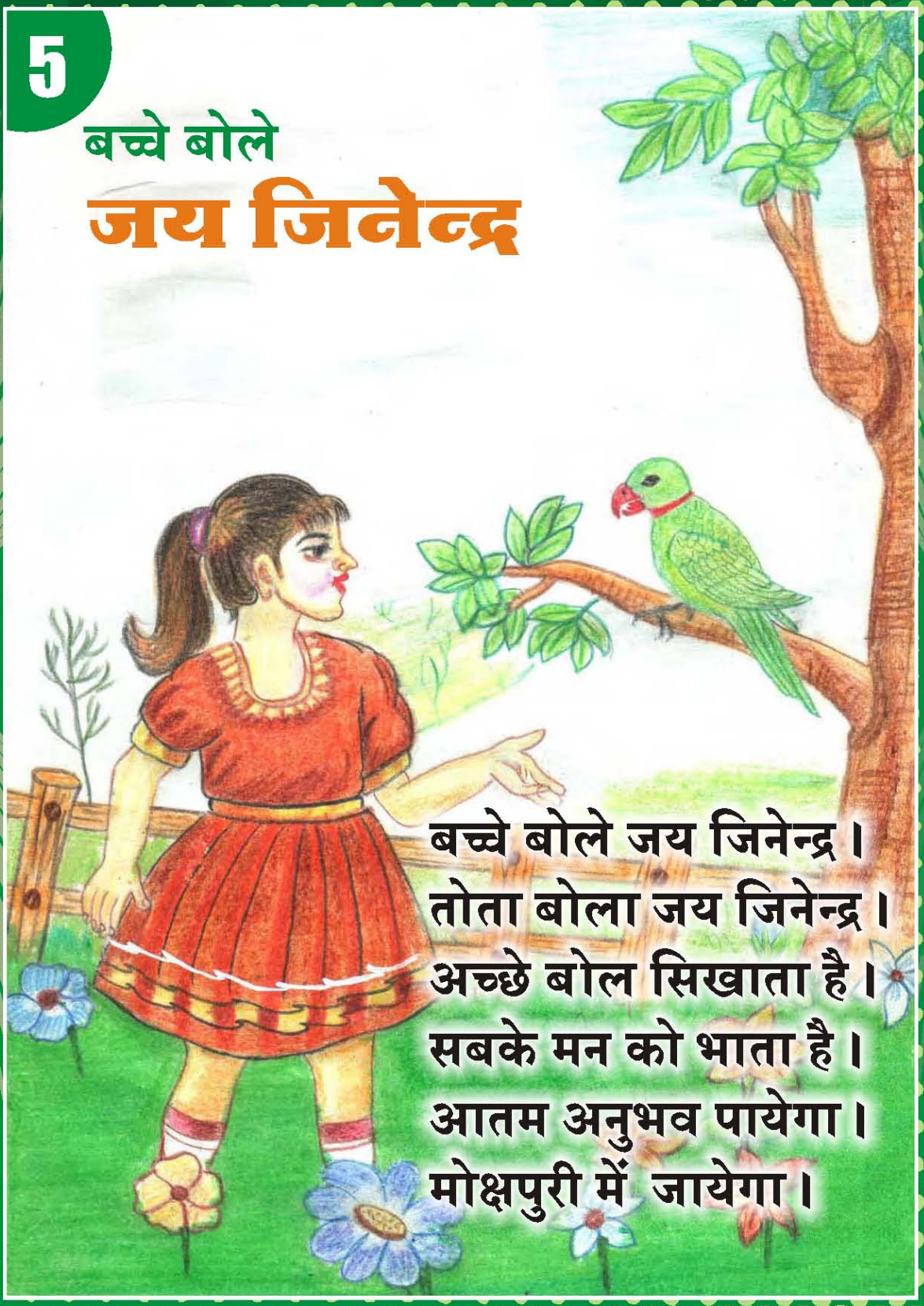

बच्चे बोले जय जिनेन्द्र।
तोता बोला जय जिनेन्द्र।
अच्छे बोल सिखाता है।
सबके मन को भाता है।
आतम अनुभव पायेगा।
मोक्षपुरी में जायेगा।

6

रोज सबेरे जल्दी उठना

रोज सबेरे जल्दी उठना।
उठकर मंत्र नवकार को पढ़ना।
सही समय पर मंदिर जाना।
जिन दर्शन कर निज पद पाना।।

7

एक फूल यूं बोला

एक फूल बच्चों से बोला,
अपने भीतर का दुःख खोला।
मुझको कभी भी तोड़ो ना,
पत्ती टहनी मोड़ो ना।
जैसे तुम एक जीव हो,
वैसे हम भी जीव हैं।

टिक टिक टिक हाथ घुमाती

जीव

पुद्गल

धर्म

अधर्म

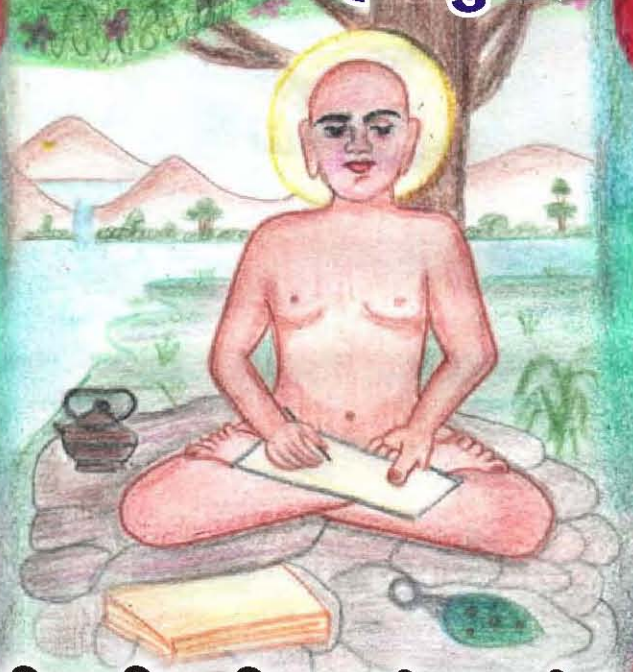

आकाश

काल

टिक टिक टिक घड़ी बताती ।
हमें समय का मूल्य बताती ।
छः द्रव्यों का समय है नाम ।
समय आतमा का भी नाम ।
कुन्दकुन्द प्रभु ने बतलाया ।
आतम का वैभव दिखलाया ।

9

चले सैर को लोभीराम

चले सैर को लोभीराम।
देखा एक लटकता आम।
इस पर चढ़ने लगे पेड़ पर।
फिसला पैर तो गिरे धड़ाम।
चोरी का फल उसने पाया।
लोभ पाप का बाप बताया।

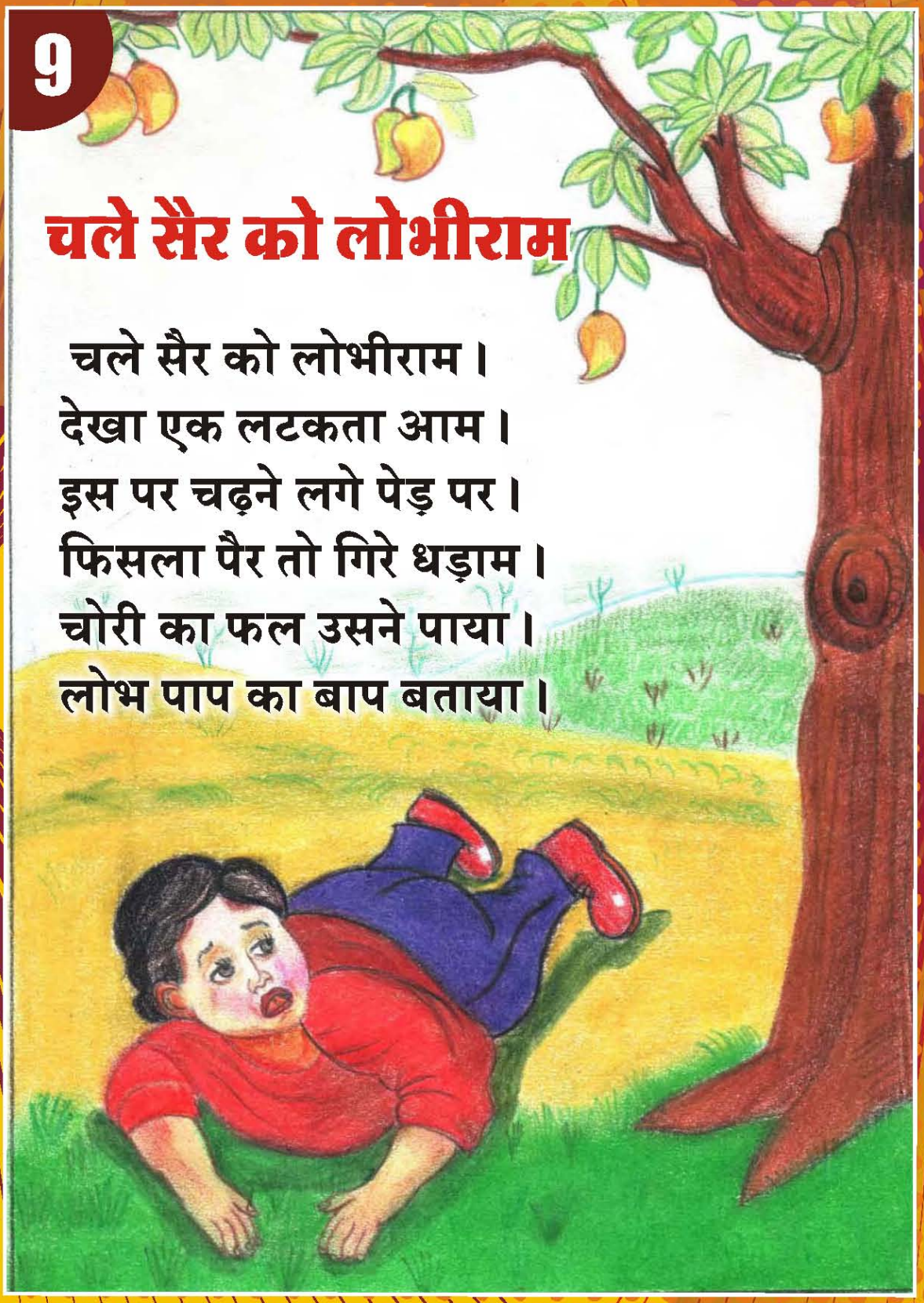

10

पांच रंग का सुंदर झंडा

पांच रंग का सुंदर झंडा।
लहराता है ये पचरंगा।
जिनशासन की शान बढ़ाये।
हर जैनी के मन में भाये।
मंगलमय हम करें वंदना।
ये झंडा फहरे हर अंगना।।

11

आतम देह का कैसा साथ !

आतम देह का कैसा साथ, हो आतम का ही विश्वास ।
देह साथ न जाती है, आतम सच्चा साथी है ।
देह को अपना मानोगे, तो चार गति में घूमोगे ।
रत्नत्रय प्रगटाओगे, तो निश्चित शिवपुर जाओगे ।

12

मंदिर हम क्यों जाते हैं

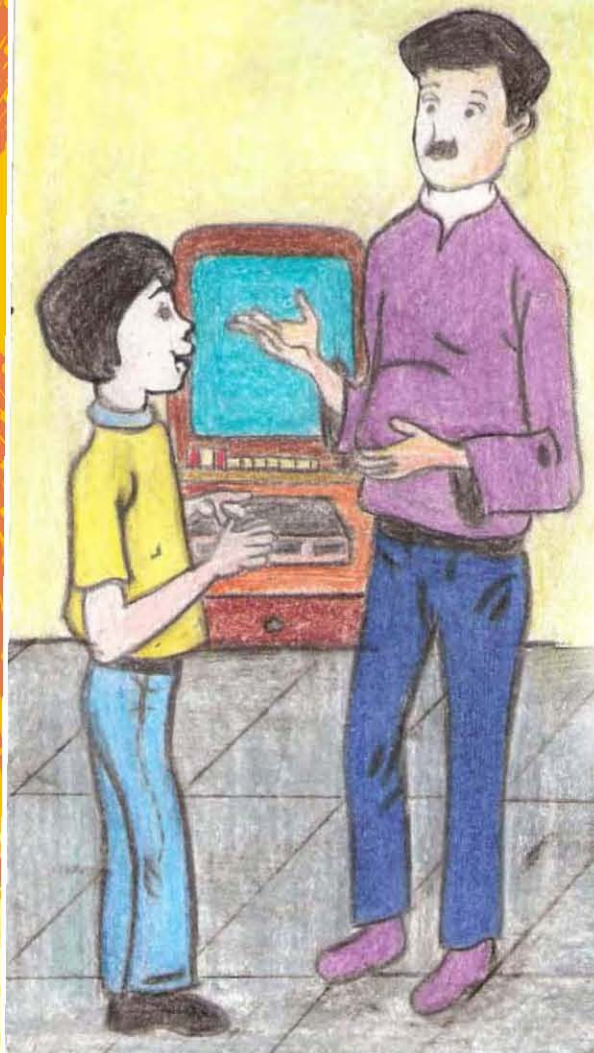

मंदिर हम क्यों जाते हैं ?
जिनदर्शन क्यों करते हैं ।
भगवन जैसा बनना है ।
तो दर्शन उनके करना है ।
जैसा प्रभु ने काम किया ।
हम भी वैसा काम करें ।
जिन सम ही बन जायेंगे ।
लौटकर हम न आयेंगे ।

13

जिन मंदिर है समवशरण सा

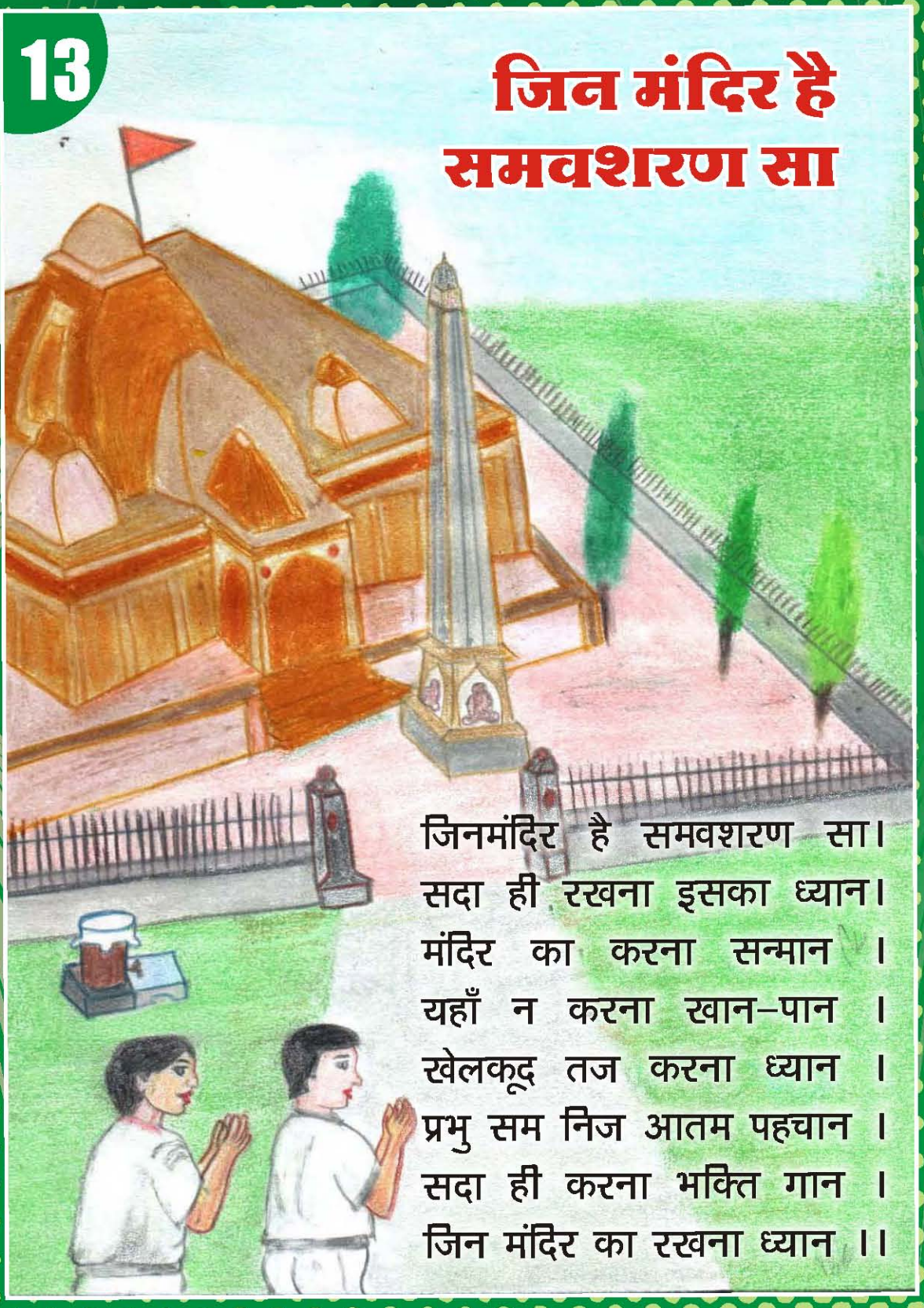

जिनमंदिर है समवशरण सा।
सदा ही रखना इसका ध्यान।
मंदिर का करना सन्मान ।
यहाँ न करना खान–पान ।
खेलकूद तज करना ध्यान ।
प्रभु सम निज आतम पहचान ।
सदा ही करना भक्ति गान ।
जिन मंदिर का रखना ध्यान ।।

14

चिड़िया सुन ले कुट-कुट-कुट

चिड़िया सुन ले कुट–कुट–कुट।
तू भी खा ले ये बिस्कुट।
भूख लगी है खा ले तू।
खाकर ही उड़ जाना तू।

बिस्कुट मैं ना खाती हूँ।
दाना पानी लेती हूँ।
बिस्कुट हैं बाजार के।
घर में बनाओ प्यार से।
बड़े प्यार से खाऊँगी।
वरना भूखी रह जाऊँगी।।

15

मेरी प्यारी नानी

मेरी प्यारी-प्यारी नानी।
रोज सुनाती नई कहानी।।
अच्छी-अच्छी कथा सुनाये।
पाप मार्ग से हमें बचाये।
जिनशासन के वीर पुरूष की,
गौरव गाथा रोज बताये।
चश्मा पहने प्यारी नानी।
रोज सुनाती नई कहानी।।

16

घंटा बोला टन-टन-टन

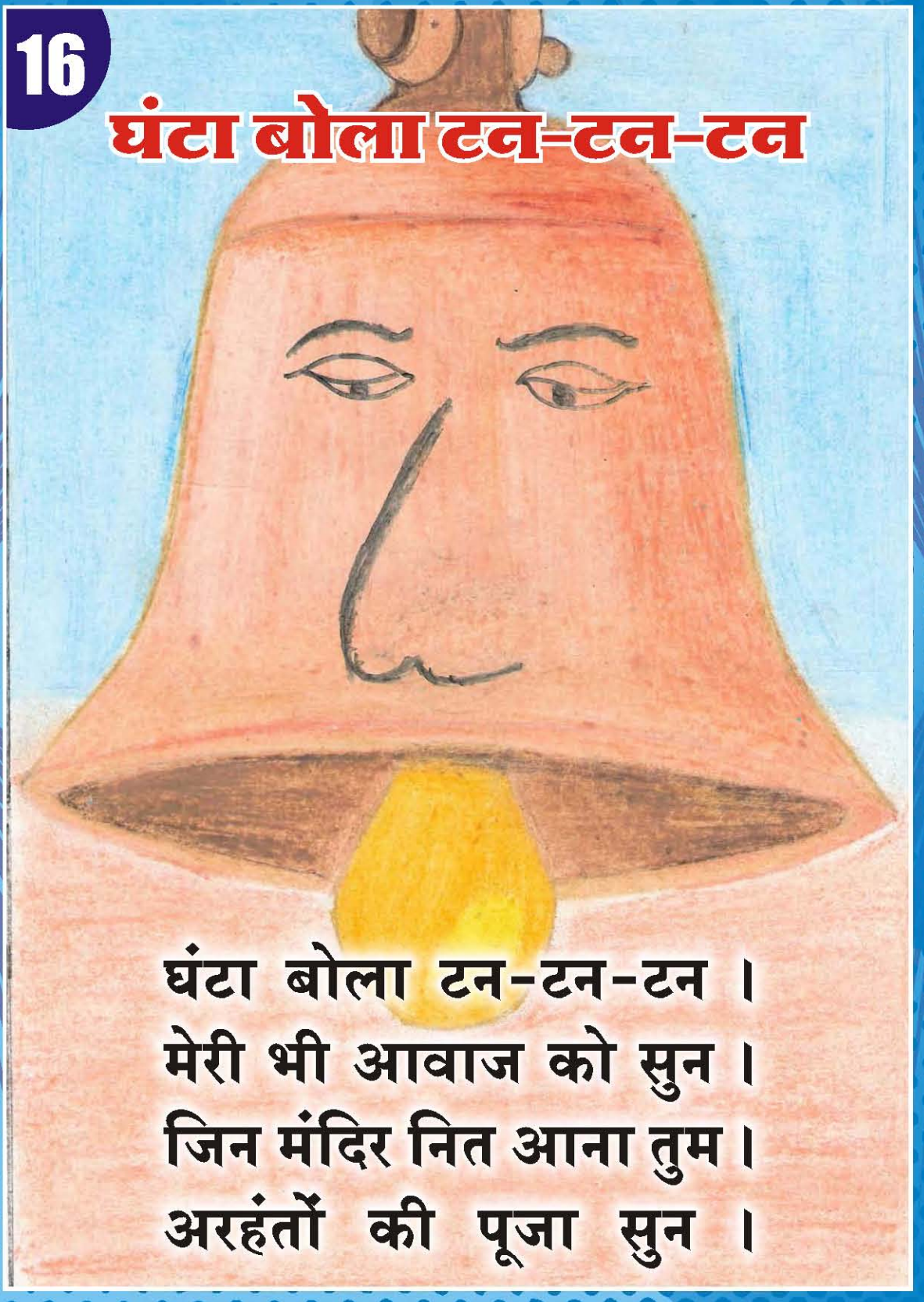

घंटा बोला टन-टन-टन ।
मेरी भी आवाज को सुन ।
जिन मंदिर नित आना तुम ।
अरहंतों की पूजा सुन ।